मुंशी प्रेमचंद की कहानी आहूति का नाट्य रूपांतरण

''आहूति''

रूपांतरकार - के.के. अग्रवाल

पात्र : रूपमणि - एक यूनिवर्सिटी की छात्रा

आनंद - रूपमणि का सहपाठी

विशम्भर - रूपमणि का सहपाठी

चंपा - रूपमणि की नौकरानी

दूर कहीं ''सरफरोश़ी की तमन्ना अब हमारे दिल में है'' का रिकार्ड बज रहा है। दूर से ही इन्कलाब - ज़िन्दाबाद, भारत माता की जय के नारे लग रहे हैं।

रूपमणि के घर का वराण्डा। चंपा सरफरोश़ी की तमन्ना गुनगुनाते हुये सफाई आदि कार्य कर रही है। तभी आनंद आता है।

आनंद चंपा क्या गा रही हो ?

चंपा आनंद बाबू आप ? अरे वो दूर से आवाज़ आ रही थी - सो - हम भी गुनगुनाने लगे।

आनंद विशम्भर आये थे ?

चंपा विशम्भर दादा तो नहीं आये।

आनंद क्या कर रही है तुम्हारी दीदी ?

चंपा आप बैठिये हम बुलाते हैं।

(चंपा अंदर जाती है। रूपमणि कमरे से बाहर आती है।)

रूपमणि आओ आनंद मैं तुम्हें ही याद कर रही थी।

आनंद क्यों ?

रूपमणि इतने दिनों से आये क्यों नहीं ?

आनंद बस यूं ही।

रूपमणि यूं ही क्या ?

आनंद अरे एक्ज़ाम सर पर हैं। ऊपर से एक्स्ट्रा क्लासेज़

रूपमणि ओ हो - तो तुम्हें कबसे होने लगी एक्ज़ाम की चिन्ता ?

आनंद क्यों मुझे पास नहीं होना क्या ? तुम तो कालेज छोड़ कर यहाँ आकर बैठ गयी हो।

रूपमणि अगर मेरा स्वास्थ्य खराब न होता और डाक्टर ने तीन महीने के लिये पढ़ाई छोड़ने की हिदायत न दी होती तो मैं क्या हॉस्टल छोड़ती ?

आनंद पर मुझे तो अकेलापन खलता है न।

रूपमणि क्यों खलता है ? और साथी भी तो हैं। विशम्भर भी तो है।

आनंद विशम्भर ? विशम्भर ही तो आफ़त की जड़ है।

रूपमणि क्यों क्या हो गया ?

आनंद तुम्हें नहीं पता ?

रूपमणि क्या ?

आनंद विशम्भर कहाँ है ?

रूपमणि नहीं तो।

आनंद सच कह रही हो ?

रूपमणि हाँ मगर बात क्या है ?

आनंद वो चला गया है।

रूपमणि कहाँ ?

आनंद ये शोर सुन रही हो ?

रूपमणि शोर ? आनंद तुम इसे शोर कह रहे हो ?

आनंद और क्या कहूँ ?

रूपमणि ये तो हमारी आवाज़ है। मेरी आवाज़, तुम्हारी आवाज़, हम सबकी आवाज़। देश की आवाज़। अब ये आवाज़ बुलंद हो रही है। देश की स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू हो गयी है।

आनंद मगर किसी भी लड़ाई में, समय के साथ अपनी चालें तय की जाती हैं। अपनी हैसियत और परिस्थितियों को भूलकर हम कोई लड़ाई नहीं लड़ सकते।

रूपमणि मतलब ?

आनंद मतलब ये कि बिना सोचे समझे पुलिस के सामने सीना खोल कर खड़े हो जाना लड़ाई नहीं आत्म हत्या कहलायेगी।

रूपमणि तुम कैसी बातें कर रहे हो आनंद ?

आनंद क्यों ? मानलो कलको मैं पढ़ाई लिखाई छोड़कर कहीं किसी मोर्चे का नेतृत्व करते हुये शहीद हो जाऊँ तो देश का क्या फ़ायदा होगा ?

रूपमणि स्वतंत्रता की लड़ाई कोई बनिये की दुकान नहीं है जहाँ हर सामान का मूल्य नफ़े नुक्सान के हिसाब से तय किया जाता है। - जिसमें देश भक्ति का जज़्बा होता है वो बिना आगा पीछा देखे देश पर कुर्बान होने को तैयार रहता है।

आनंद मुझे लग ही रहा था कि उसकी इस मूर्खता में तुम्हारा समर्थन ज़रूर होगा।

रूपमणि मैं समझ नहीं पा रही कि तुम बार बार क्या बात कर रहे हो ?

आनंद मैं विशम्भर को छोड़कर और किसकी बात कर सकता हूँ ?

रूपमणि क्या हुआ विशम्भर को ?

आनंद लाट साहब वालंटियर्स में नाम लिखाने के लिये स्वराज भवन चले गये हैं।

रूपमणि फिर ?

आनंद फिर क्या ? बाबू जी से कहकर दाखिला कराया। स्कालरशिप दिलवाया, हॉस्टल में जगह दिलवाई और ये जनाब चल दिये, स्वराज की अलख जगाने। इम्तहान सिर पर है। फ़ेल हो जायेगा तब पता चलेगा। कहीं का नहीं रहेगा। मैं तो सोचता हूँ, कि मुझे इसकी मदद करनी ही नहीं चाहिये थी। सबके सामने मुझे शर्मिंदा होना पड़ेगा।

रूपमणि तुमने रोका क्यों नहीं ?

आनंद मुझे बता कर जाता, तब तो मैं रोकता।

रूपमणि फिर तुम्हें पता कैसे चला ?

आनंद लाट साहब ये चिट्ठी छोड़कर गये हैं, मेरे कमरे में।

(रूपमणि पत्र उठाकर पढ़ती है। पार्श्व में विशम्भर की आवाज़ आती है।)

''मैं जानता हूँ कि मैं जो कुछ करने जा रहा हूँ, वो मेरे हित में नहीं है। पर न जाने कौन सी शक्ति मुझे खींचे लिये जा रही है ? मैं जाना नहीं चाहता पर जा रहा हूँ। उसी तरह जैसे आदमी मरना नहीं चाहता पर मरता है। रोना नहीं चाहता पर रोता है। - आज जब वो सभी लोग जिन पर हमारी श्रद्धा है, ओखली में सिर डाल चुके हैं तो अब मेरे लिये कोई दूसरा मार्ग नहीं बचा है। मैं अब अपनी आत्मा को और अधिक धोखा नहीं दे सकता। अब ये देश की इज्ज़त का सवाल है और देख की इज्ज़त से किसी तरह का समझौता नहीं हो सकता।''

तुम्हारा - ऋणि - विशम्भर।

रूपमणि तो तुमने ये समझा कि वो मुझको बता कर गया है ?

आनंद हाँ मैं तो यही समझा था।

रूपमणि मेरे पास आता तो मैं उसे ज़रूर रोक लेती।

आनंद तो अभी क्या बिगड़ा है ? अब जाकर लौटा लाओ।

रूपमणि तुम क्यों नहीं जाते ?

आनंद जब वो आत्मा और कर्तव्य की बड़ी बड़ी बातें कर रहा है। अपने को हम लोगों से कहीं ऊँचे दरज़े का इंसान समझ रहा है, तो मैं क्यों जाऊँ उसे समझाने के लिये।

रूपमणि तो मत जाओ।

आनंद मैं तो कहता हूँ कि तुम जाओ और समझा कर लौटा लाओ।

रूपमणि मैं जब ठीक समझूँगी तब चली जाऊँगी। तुम्हारी सलाह की ज़रूरत नहीं है।

आनंद बुरा मान गयी ?

रूपमणि बुरा या भला मानने की क्या बात है ? तुमने अपना निर्णय सुना दिया। आगे मैं खुद सोचूँगी।

आनंद अभी तुम भी मत जाओ। यही ठीक है। अभी उसके सिर पर जुनून सवार है। अभी वो किसी की बात नहीं सुनेगा। जब ये जुनून उतर जायेगा तब वो खुद गिड़गिड़ाता हुआ हमारे पास आयेगा।

रूपमणि और ये जुनून कब उतरेगा ?

आनंद साफ साफ सुनना चाहती हो ?

रूपमणि हाँ।

आनंद ये जुनून उतरेगा तब जब लाट साहब साल दो साल जेल में चक्की पीस लेंगे और तपेदिक के मरीज़ होकर बाहर निकलेंगे। या फिर पुलिस के डण्डों से सिर और हाथ पाँव तुड़वा लेंगे। अभी तो उसकी आँखों के सामने विशम्भर नाथ ज़िंदाबाद। हमारा नेता अमर रहे के नारे और तालियों की गड़गड़ाहट के दृष्य घूम रहे होंगे।

रूपमणि तो तुम देश की आज़ादी की लड़ाई लड़ने वालों के ऐसे हश्र की कल्पना कर रहे हो।

आनंद और क्या करूँ ?

रूपमणि कुछ मत करो। तुम कुछ कर भी नहीं सकते। जो देश पर मर मिटने को, पागलपन समझता हो, वो क्या कोई कुर्बानी देगा ?

आनंद अगर तुम मुझे कह दो कि मेरे जान देने से देश का उद्धार हो जायेगा तो मैं आज अपनी जान दे दूँ। लेकिन मुझे पता है कि आज के हालात में, मैं क्या, मेरे जैसे सौ पचास और भी आगे आ जायें तो भी कुछ भला नहीं होगा ? जान देने के अलावा कोई और प्रत्यक्ष परिणाम दिखाई देता है क्या तुम्हें ? बताओ ?

रूपमणि मुझे कुछ नहीं दिखाई देता। सब अपनी तरह सोचते हैं। मैं किसी को सही या ग़लत बताने वाली कौन होती हूँ।

आनंद अच्छा तुम बताओ पिछले महीने मैंने पूरी क्लास से चंदा जमा कराया और उसमें अपना सबसे अधिक योगदान दिया या नहीं ? पूरी यूनिवर्सिटी में घूम घूम कर छात्रों से स्वदेशी की प्रतिज्ञा कराई या नहीं ? विलायती कपड़े बाहर फिकवा कर खादी पहनना शुरू कराया या नहीं ? क्या ये स्वतंत्रता की लड़ाई में हमारा योगदान नहीं है ? तुम क्या ये चाहती हो कि मैं अपने पिताजी से जाकर कह दूँ कि मैं अपनी पढ़ाई छोड़कर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने जा रहा हूँ ? इसमें हमारा क्या फायदा होने वाला है ? - यही तो मैं विशम्भर को समझा रहा था। ग्रेजुयेशन नहीं हुआ तो आगे के सारे रास्ते बंद। अब तुम बताओ मैंने क्या ग़लत किया है ?

रूपमणि नहीं। तुम तो हमेशा जो करते हो, ठीक ही करते हो।

आनंद क्या हुआ ? - मेरी बात अच्छी नहीं लगी ?

नाराज़ हो गयी ?

चलो कहीं घूम आयें।

नयी फिल्म लगी है। देखने चलो थोड़ा मन बदल जायेगा।

रूपमणि नहीं, मैं नहीं जाऊँगी।

आनंद क्यों ? - तबियत ठीक नहीं है ?

रूपमणि नहीं, तबियत को क्या हुआ है ?

आनंद फिर चलती क्यों नहीं ?

रूपमणि बस मन नहीं है मेरा।

आनंद तब मैं भी नहीं जाऊँगा।

रूपमणि तो मत जाओ।

आनंद मैं चलूँ ?

(रूपमणि चुप रहती है। आनंद जाता है।)

दृष्य - 02

स्वराज भवन का दृष्य। चारों ओर गहमा गहमी है। सब अपने अपने ग्रुप के अलग अलग कामों में लगे हैं। कोई झण्डे इकट्ठे कर रहा है। कोई बैनर लगा रहा है। कोई खाने के टोकरे लगा रहा है। एक दल विदेशी सामान की दुकान पर पिकेट करने जा रहा है। दूसरा दल - श़राब की दुकानों पर जाने को तैयार है। कुछ लोग आपस में बात कर रहे हैं। बीच बीच में जोश़ में आकर इन्कलाब ज़िंदाबाद के नारे लगाने लगते हैं। पार्श्व में सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है का रिकार्ड बज रहा है।

रूपमणि **(किसी एक दल के पास जाकर)** - क्या आप में से किसी ने विशम्भर नाथ को देखा है?

व्यक्ति वही विशम्भर नाथ जो यूनिवर्सिटी में पढ़ते हैं ?

रूपमणि जी जी वही।

व्यक्ति अरे उन्हें तो देहातों को तैयार करने का काम मिला है। - क्या दिलेर आदमी है ? भई ? मान गये।

रूपमणि जी जी, कहाँ हैं वो ?

व्यक्ति स्टेशन निकल गये। उनकी सात बजे की गाड़ी है।

रूपमणि तो अभी वो स्टेशन पर होंगे ?

व्यक्ति ज़रूर होंगे। अभी निकल जाओ। देखो स्टेशन पर ही मिल जायेंगे।

दृष्य - 03

स्टेशन का दृष्य। भीड़ भाड़ में विशम्भर अपने सहयोगियों के साथ खड़ा हुआ बातें कर रहा है। तभी रूपमणि वहाँ पहुँचती है। विशम्भर देख कर उसके पास जाता है।

विशम्भर रूपमणि, तुम यहाँ ?

रूपमणि - चुप्पी -

विशम्भर आज आनंद बाबू मिले थे क्या ?

रूपमणि ये पैरों की क्या हालत बना रखी है ? पाँव में जूता पहनना भी देश द्रोह है क्या ?

विशम्भर वो भीड़ भाड़ में पैर से निकल गया। - आनंद बाबू ने कुछ कहा क्या ?

रूपमणि हाँ कहा।

विशम्भर क्या कहा ?

रूपमणि कहा कि तुम्हें ये क्या पागलपन सूझा है। पुलिस डण्डे मार मार कर हाथ - पांव तोड़ देगी। कम से कम दो साल के लिये अंदर हो जाओगे। यूनिवर्सिटी से नाम कट जायेगा। वजीफा मिलना बंद हो जायेगा। - और जब बाहर आओगे तब तुम्हें तपेदिक हो चुका होगा।

विशम्भर अच्छा। ऐसा कहा ? - चलो तुम क्या सोचती हो मेरे बारे में ?

रूपमणि मैं - मैं क्या सोचूंगी ? मुझे तो तुमने बता कर आना भी ठीक नहीं समझा।

विशम्भर जब मैंने आनंद बाबू को नहीं बताया तो तुम्हें कैसे बताता ?

रूपमणि क्यों ? मेरा कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है क्या ?

विशम्भर है, ज़रूर है। मगर मेरा तो अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं बचा। - दाखिला दिलवाया आनंद बाबू ने। वजीफ़ा दिलवाया आनंद बाबू ने। हॉस्टल की फ़ीस भरी आनंद बाबू ने। इस तरह मेरा तो सारा अस्तित्व आनंद बाबू के हाथों बंधक बना हुआ है।

रूपमणि तो क्या मैं भी आनंद के हाथों बिकी हुयी हूँ ?

विशम्भर तुम्हारा तो नहीं कह सकता मगर आनंद बाबू तो ज़रूर तुम्हारे हाथों बिके हुये हैं।

रूपमणि और तुम ? तुम क्या सोचते हो मेरे बारे में ?

विशम्भर मैं ? कैसे कहूँ कि मैं क्या सोचता हूँ तुम्हारे बारे में ? मैं जो सोचता हूँ, उसे शब्दों में कहना तो आनंद बाबू के साथ दगा होगा।

रूपमणि आनंद-आनंद-आनंद। आनंद तुम्हारे जीवन का आलंब बन गया है? आनंद से दगा नहीं कर सकते, खुद से कर सकते हो। - मुझसे कर सकते हो। - वाह रे क्रांतिकारी।

विशम्भर नहीं। तुम तो ऐसा मत कहो।

रूपमणि तो फिर कैसा कहूँ ?

विशम्भर तुम - तुम तो - तुम तो -

रूपमणि हाँ हाँ कहो। - कहो - मैं क्या हूँ - तुम्हारे लिये ?

विशम्भर तुम ? तुम - मेरे लिये - अब मैं क्या कहूँ ? - क्या मेरे मुँह से सुने बिना तुम्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता क्या ?

रूपमणि मिलता है। - ज़रूर मिलता है। - फिर मेरी एक बात मानोगे ?

विशम्भर हाँ। ज़रूर मानूंगा।

रूपमणि लौट चलो।

विशम्भर क्या ?

रूपमणि आगे मत जाओ। मेरे साथ लौट चलो।

विशम्भर क्या कह रही हो तुम ? - मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी। -ये एक मित्र की सलाह कैसे हो सकती है ?

रूपमणि क्यों ? - क्यों नहीं हो सकती ?

विशम्भर मुझे इस अभियान से रोक कर तुम क्या पाना चाहती है ?

रूपमणि एक स्त्री अपने जीवन में क्या पाना चाहती है - क्या इसकी कल्पना तुम नहीं कर सकते ?

विशम्भर मैं देश की स्वतंत्रता के आंदोलन से अलग नहीं हो सकता।

रूपमणि कौन कह रहा है कि तुम देश की स्वतंत्रता के आंदोलन से अलग हो जाओ ?

विशम्भर फिर क्या चाहती हो मुझसे ?

रूपमणि वाह। मैं तो बिना कहे तुम्हारे मन की सारी बातें समझ लूँ और तुम - जब तक मैं चीख़ चीख़ कर न कहूँ, कुछ नहीं समझोगे ? वाह मेरे क्रांतिकारी वीर।

विशम्भर देखो रूपमणि, मैं जानता हूँ कि तुम मेरे जीवन की चिंता से विचलित हो। किन्तु सोचो यहाँ से पलट कर इन प्राणों का क्या मूल्य है ? बी.ए. - एम.ए. की डिग्री और सौ, दो सौ रूपये की नौकरी। और बस -। इसके बदले यहाँ मुझे क्या मिलेगा जानती हो ? - सम्पूर्ण देश का स्वराज्य। क्या इतने महान हेतु के लिये जान कुर्बान करना ऐसी ज़िदंगी से कहीं बढ़कर नहीं है ? - गाड़ी आने वाली है। अब तुम जाओ। आनंद बाबू से कहना कि मुझसे नाराज़ न हों।

रूपमणि विशम्भर विशम्भर। मैंने कभी नहीं चाहा कि तुम लौट चलो। मैं तो - मैं तो चाहती हूँ कि -

विशम्भर क्या ?

रूपमणि तुम मुझे अपने साथ ले चलो।

विशम्भर क्या ? क्या कह रही हो ?

रूपमणि मुझे अपने साथ ले चलो।

विशम्भर नहीं। कभी नहीं। ये नहीं हो सकता।

रूपमणि क्यों ?

विशम्भर इसका उत्तर मैं नहीं देना चाहता।

रूपमणि तुम समझते हो कि मैं ऐशो आराम की ज़िंदगी जीने वाली शहरी लड़की गाँव में तुम्हारा साथ कैसे निभाऊँगी ?

विशम्भर मुझे पता है कि तुम हर हाल में मेरे साथ कंधे से कंधा मिला कर चलोगी।

रूपमणि तो फिर क्या तुम्हारे साथ चले जाने से मेरे माता-पिता मुझे त्याग देंगे ?

विशम्भर अगर ऐसा होता है तो ये भी कितना दुखदायी होगा ?

रूपमणि पर मैं एक तिनके बराबर भी इसकी परवाह नहीं करती।

विशम्भर - रूपमणि - मेरी शक्ति बनो। मेरी तुमसे विनती है कि मेरी इस याचना को स्वीकार करो। मुझे, तुम्हारी याद हृदय में लेकर, गर्व के साथ यहाँ से जाने दो। मैं तुम्हें आश्वस्त करता हूँ कि हर हाल में जीत कर लौटूँगा।

रूपमणि - अगर तुम्हारा ये आदेश है विशम्भर तो सिर आँखों पर। लेकिन इतना जान लो कि अगर तुम यह सोच रहे हो कि मैं क्षणिक आवेश में आकर अपना भविष्य नष्ट करने पर उतारू हूँ तो यह तुम्हारी भूल है। मैं तुम्हें दिखा दूँगी ये मेरा क्षणिक आवेश नहीं - दृढ़ संकल्प है। आज से मैं तन-मन-धन से केवल तुम्हारे साथ रहूँगी।

विशम्भर रूपमणि - मैं तुम्हारा ऋणि रहूँगा।

रूपमणि अब मेरी एक प्रार्थना मान लोगे ?

विशम्भर हाँ। कहो तो।

रूपमणि यदि आत्माभिमान प्रश्न न हो, और यदि तुम्हारे किसी सिद्धान्त को चोट न पहुँचती हो तो - क्षणिक आवेश में आकर पुलिस के पंजे में मत जाना। - मैं तुम्हारी सुरक्षा के लिये ईश्वर से प्रार्थना करती रहूँगी।

विशम्भर रूपमणि।

(रेल की सीटी बजती है। - विशम्भर चला जाता है।)

दृष्य - 04

दो माह पश्चात्। रूपमणि के घर का वराण्डा। सामने गांधी जी का फोटो लगा है। एक दो पोटली आदि रखी हैं। चंपा चरखा कात रही है। आनंद आता है।

आनंद चंपा ?

चंपा अरे आनंद बाबू, अबके बड़े दिनों बाद आये।

आनंद क्या कर रही हो ?

चंपा सूत कात रही हूँ।

आनंद ये नया काम शुरू कर दिया ?

चंपा जैसी मालकिन वैसी नौकरानी।

आनंद अच्छा।

चंपा वो रोज़ सूत कातती हैं सो मैं भी कातती हूँ।

आनंद कहाँ है तुम्हारी दीदी ?

चंपा पूजा कर रही हैं। अभी निकलेंगी।

आनंद क्या रोज़ पूजा करती हैं ?

चंपा पूछिये मत। पिछले दो महीने से क्या क्या कर रही हैं। रोज पूजा करती हैं। रोज सूत कातती हैं। और जाने क्या लिखती रहती हैं। देखिये कितना महीन सूत कातने लगी हैं। मुझसे तो चरखा ही ठीक से नहीं चलता। बार बार तागा टूट जाता है।

आनंद क्या करती हैं इस सूत का ?

चंपा इकट्ठा कर रही हैं। जब भरपूर हो जायेगा तो किसी का कुर्ता सिलवा देंगी।

आनंद किसका कुर्ता ?

चंपा जिसको - चाहेंगी उसी का सिल वायेंगी। - और ये देखिये, पूरी बारह साड़ियाँ हैं सिल्क की। सबको दान करने की तैयारी है।

आनंद क्यों ?

चंपा दीदी अब केवल खादी पहनेंगी।

आनंद तो, तू ले ले इनमें से कुछ साड़ियाँ।

चंपा वाह बाबू जी। जब मेरी मालकिन खादी पहनेगी तो मैं कैसे सिल्क पहन सकती हूँ ? - वो अगर इतनी देशभक्त हैं, तो इत्ती सी तो मैं भी हूँ।

(रूपमणि खादी की धोती पहने कंधे पर झोला लिये कमरे से बाहर आती है।)

रूपमणि किससे बात कर रही है चंपा ? - अरे आनंद तुम कब आये ?

आनंद बस अभी।

रूपमणि चंपा, मेरी साड़ियों का झोला ?

चंपा जी ये रहा।

रूपमणि अच्छा ये चरखा भीतर रख दे। और आनंद बाबू को पानी पिलाओ।

चंपा जी।

रूपमणि और बताओ आनंद ?

आनंद तुमसे तो अब बात करना भी मुश्किल हो गया है।

रूपमणि तुम्हें ही कौन सी फुर्सत है ? आज दो महीने बाद आये हो।

आनंद आओ कहीं बाहर चलें।

रूपमणि अभी ? अभी तो स्वराज भवन जाना है।

आनंद रोज स्वराज भवन जाती हो ?

रूपमणि रोज। वहाँ से रोज हो रही गतिविधियों का सही सही हाल मिल जाता है। अखबारों से तो आधी अधूरी ख़बर मिलती है।

आनंद सुना विशम्भर ने तो देहातों में खूब हल्ला गुल्ला मचा रखा है।

रूपमणि हल्ला गुल्ला ? अरे शासन की हवा ख़राब है।

आनंद वहाँ उसे अपनी मर्ज़ी का काम मिल गया है। यहाँ तो उसकी ज़बान बंद रहती थी। वहाँ देहातियों पर खूब गरजता होगा। - आदमी है दिलेर।

रूपमणि दिलेर ही देश की स्वंतत्रता के आंदोलन का नेतृत्व कर सकते हैं। कांग्रेस की बुलेटिन पढ़ कर देखो। दो ही महीनों में विशम्भर ने गाँवों में ऐसी जागृति फैला दी है कि वहाँ के लोग उसमें दूसरा गाँधी देखने लगे हैं।

आनंद ओ हो - दूसरा गाँधी। कुछ ज़्यादा नहीं हो गया ?

रूपमणि दो ही महीनों में गांव वालों ने विलायती कपड़ा त्याग दिया है। सब खादी पहन रहे हैं।

आनंद वाह वाह। और क्या किया है हमारे गांधी जी ने ?

रूपमणि गांव वालें स्वेच्छा से शराब पीना छोड़ रहे हैं। बिना पिकेटिंग किये शराब की दुकाने बंद हो रही हैं।

आनंद लगता है कि तुम तो विशम्भर की भक्त हो गयी हो ?

रूपमणि मुझसे ज़्यादा गाँव की औरतें उसकी भक्त हो गयी है। अब उनके मर्द घर में आकर क्लेश करते। और न ही नकली शराब पीकर मर रहे हैं। घर में चार पैसे आ रहे हैं सो अलग।

आनंद मतलब कपड़े वालों का धंधा बंद। शराब का धंधा बंद। अब तुम उसे वापस बुला लो नहीं तो -

रूपमणि उसे कौन वापस आने देगा ? वो तो गांवों की तस्वीर बदल रहा है।

आनंद और भी कुछ कर रहा है क्या ?

रूपमणि कुछ नहीं, बहुत कुछ। वो गांव गांव में पंचायतें गठित करवा रहा है। कल पूरे परगने की नव गठित- पंचायतों का सम्मेलन है।

आनंद इससे क्या लाभ होने जा रहा है ?

रूपमणि लोग अपने झगड़ों के लिये पंचायतों के पास जायेंगे। वहाँ उन्हें सस्ता, सरल और शीघ्र न्याय मिल जायेगा। कचहरियों के चक्कर लगाना बंद। वकीलों का शोषण बंद। समय की बर्बादी बंद।

आनंद मैं, तुम लोगों के स्वराज्य की परिकल्पना समझ रहा हूँ। तुम्हारे स्वराज्य का मतलब है कि ज़मीदार, व्यापारी, वकील भाड़ में जायें और मज़दूर और किसान मौज उड़ायें।

रूपमणि ग़रीब मज़दूर को मेहनत की मज़दूरी मिल जाये और किसान को उसकी फसल का मूल्य मिल जाये तो तुम्हारे लिये ये मौज उड़ाना हो गया ?

आनंद जैसे स्वराज्य की कल्पना तुम कर रही हो, उसमें ये मजदूर काम पर आना बंद कर देंगे, किसान जब चाहेगा तब खेत पर जायेगा काम धंधे बंद हो जायेंगे। व्यापार सब ढप्प हो जायेंगे। देश बर्बाद हो जायेगा।

रूपमणि कैसी बात कर रहे हो आनंद ? मुझे तो तुम्हारी सोच पर तरस आ रहा है।

आनंद शिक्षा, सम्पन्नता और शासन का प्रभुत्व समाज पर हमेशा रहता है और उसी से समाज चलता है।

रूपमणि तुम ये बताओ कि जब मज़दूर और किसान असहाय, कमज़ोर और भूखे रहेंगे, उनका भविष्य अनिश्चित होगा तो देश का भला कैसे हो सकता है ?

आनंद ये सब तुम्हारी निजी कल्पना है। सपनों की दुनियाँ। ज़मीनी सच्चाई से बिल्कुल अलग।

रूपमणि काश तुमने इस आंदोलन का साहित्य पढ़ा होता।

आनंद तुम ही पढ़ो। मैंने तो, न पढ़ा है और न पढ़ना चाहता हूँ।

रूपमणि तुम नहीं भी पढ़ोगे तो देश का कोई नुक्सान भी नहीं होगा।

(तभी एक आदमी आकर एक लिफ़ाफा दे जाता है। रूपमणि खोलकर पढ़ती है। उसका चेहरा तन जाता है। लड़खड़ा कर बैठ जाती है।)

आनंद **(घबरा कर)** क्या हुआ ?

रूपमणि विशम्भर, पकड़ लिये गये।

आनंद कहाँ और किस आरोप में पकड़े गये ?

रूपमणि रानी गंज की विशाल सभा को संबोधित करते हुये किसानों को भड़काने, देश में अशांति फैलाने एवं अंग्रेज सरकार की नीतियों की निंदा करने के आरोप में।

आनंद गया दो साल के लिये अंदर। यूनिवर्सिटी से नाम कट, वजीफा खत्म, पढ़ाई लिखाई बंद। भविष्य चौपट। मैं तो पहले ही कह रहा था। मगर तुम ही उसको उकसा रही थी इस आग में कूद जाने के लिये। अब झेलो। जब बाहर आयेगा तो कहीं कोई काम नहीं मिलेगा। भूखा मरेगा। उसकी ज़िंदगी ख़राब करने का काफी श्रेय तुम्हें भी जाता है।

रूपमणि आनंद क्या डिग्रियाँ पा लेने से ही इंसान का जीवन सफल हो जाता है ? क्या सारा ज्ञान पुस्तकों में ही भरा है ? - नहीं आनंद नहीं। इन दो सालों में जेल की सलाखों के पीछे जीवन का जो अनुभव विशम्भर को प्राप्त होगा वो तुम्हें बी.ए., एम.ए., पीएच.डी. की डिग्रीयाँ प्राप्त करके और पचास साल सरकारी नौकरी करके भी प्राप्त होने वाला नहीं है।

आनंद शिक्षा का उद्देश्य पेट पालने की योग्यता प्राप्त कर लेना भर नहीं होता। राष्ट्र के हित में प्राणों की बाजी लगाने का आत्म बल पैदा करना होता है।

तुम अपने माता पिता के धन दौलत और औहदे की बैसाखियों पर चल कर बटोरी हुयी डिग्रियों के बल पर एक

प्रतिष्ठित परिवार के नायक तो बन सकते हो, पर एक प्रतिष्ठित राष्ट्र के नायक कभी नहीं बन सकते। - विशम्भर आज राष्ट्र नायक है। उसके एक संकेत पर सैकड़ों लोग सीना खोल कर अपने प्राणों की आहूति देने को तैयार हैं। - दूसरी ओर तुम हो जो एक बार आँख से आँख मिलाकर जनता के सामने खड़े होने की हिम्मत नहीं कर सकते।

आनंद कितनी विडंबना है ? आज जिन लोगों ने तुम्हें अपने पैरों के नीचे कुचल रखा है। जो तुम्हें कुत्ता समझते हैं। ब्लडी इण्डियन डॉग कहते हैं। - उन्हीं की गुलामी करने के लिये तुम दिन रात एक करके डिग्रियाँ बटोर रहे हो। मुझे तो ये सोच कर भी शर्म आती है।

आनंद ओ हो हो। तुम तो बड़ी पक्की क्रांतिकारी बन गयी हो।

रूपमणि सच्ची और खरी बात कहने के लिये मुझे किसी मुखौटे की आवश्यकता नहीं है।

आनंद अभी तुम गुस्से में हो। - अच्छा ये बताओ कल विशम्भर की गिरफ्तारी पर स्वराज भवन में बड़ी सभी ज़रूर होगी। तुम जाओगी?

रूपमणि केवल जाऊँगी ही नहीं। मैं कल मंच से बोलूँगी भी।

आनंद अपने अम्मा - दादा की अनुमति ली ?

रूपमणि वो भी ले लूंगी।

आनंद उन्होंने अगर मना कर दिया तब ?

रूपमणि सिद्धान्तों के विषय में, मैं अपनी आत्मा की आवाज़ को सर्वो परि रखती हूँ।

आनंद मैं भी चलूं तुम्हारे साथ ?

रूपमणि नहीं आनंद। तुम अब घर जाओ। मुझे यहाँ से अभी बहुत दूर जाना है।

आनंद कहाँ ?

रूपमणि कल, वहीं से रानी गंज चली जाऊँगी। विशम्भर ने जो ज्योति जलाई है, मैं अब उसे बुझने नहीं दूँगी।

आनंद फिर कब लौटोगी ?

रूपमणि पता नहीं।

(आनंद चला जाता है। रूपमणि स्थिर खड़ी रहती है। फिर मुड़ कर पीछे विशम्भर की तस्वीर को उठाती है। विव्हल होकर बैठ जाती है। चंपा काते हुये सूत औ सिल्क की साड़ियों की पोटलियाँ लाकर रूपमणि को पकड़ाती है।)

चंपा **(भीगी आंखों से)** दीदी - इन्कलाब।

रूपमणि ज़िंदाबाद।

- समाप्त -